Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APG–1004

M.A. (Previous) Examination, 2021

HINDI

Paper - IV

(मध्यकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीतों के उद्‌गम प्रसंग का परिचय दीजिए।

   (ii) 'विनय पत्रिका' सृजन के पीछे रचनाकार का क्या प्रतिपाद्य रहा है ?

   (iii) बिहारी का विप्रलंभ शृंगार अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सका, इसका क्या कारण रहा ?

(iv) 'तुमहु कान्ह मानो भए, आज काल्हि के दानि' के माध्यम से कवि ने श्रीकृष्ण की कलिकाल के दानियों से तुलना क्यों की ? कारण बताइए।

(v) दरद दीवानी मीरां को भक्ति-साधना के मार्ग में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

(vi) "भक्तिमती मीरा ने न तो किसी संप्रदाय में दीक्षा ली और ना ही किसी गुरु का शिष्यत्व ग्रहण किया।" इस कथन के विषय में अपने विचार लिखिए।

(vii) 'या मन की जु दसा घन आनंद, जीव की जीवनी जान ही जाने' को ध्यान में रखते हुए सुजान एवं घनानन्द के प्रेम को समझाइए।

(viii) घनानन्द की प्रेम-पीर के सम्बन्ध में राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर' ने क्या कहा है ?

(ix) "जितना प्रेम मुझसे करते हो, उतना यदि भगवान से करो तो आपका उद्धार हो जाए।" यह कथन किस कवि की पत्नी ने कहे और क्यों ? प्रसंग की जानकारी दीजिए।

(x) महाकवि सूरदास एवं महाप्रभु वल्लभाचार्य के प्रथम मिलन का प्रसंग बताइए।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)।

2. कलि नाम कामतरु राम को।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख, दोष घोर घन घाम को।
नाम लेत दाहिनो होत मन, बाम विधाता बाम को।
कहत मुनीस महेस महातम, उलटे सूधे नाम को।
भलो लोक परलोक तासु जाके बल ललित ललाम को।
तुलसी जग जानियत नाम ते, सोच न कूच मुकाम को॥

3. कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपाल कृपा ते, संत सुभान गहौंगो।
जथा लाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरंतर मन क्रम, बचन नेम निबहौंगो।
परुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि, तेहि पावक न दहौंगो।
विगत मान संतोष सदा, पर गुन, नहिं दोष कहौंगो।
परहरि देन-जनित चिंत, सुख-दुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरि भक्ति लहौंगो॥

4. हरि सो मीत न देख्यो कोई

बिपति काल सुमिरत, तिहिं औसर आनि तिरीछो होई।

ग्राह गहे गजपति मुकरायौं, हाथ चक्र ले धायो।

तजि बैकुंठ, गरुड़ तजि, निकट दास के आयो।

दुरबासा के साप निवार्‌यो, अंबरीख पत राखी।

ब्रह्मलोक परजंत फिर्‌यो तहं, देव मुनिजन साखी।

लाखाग्रह ते जरत पांडुसुत, बुधि बल नाथ उबारे।

सूरदास प्रभु अपने जन के, नाना त्रास निवारे।

5. आजु नंद नंदन रंग भरे।

बिधि लोचन सु बिसाल दुहुनि के, चितवन चित्त हरे।

भामिनि मिले परम सुख पायो, मंगल प्रथम करे।

कर सों कर जु कर्‌यो कंचन ज्यों, अंबुज उरज धरे।

आलिंगन दे अधर पान करि, खंजन कंज लरे।

हठि करि मान कियो जब भामिनि, तब गहि पाइ परे।

पुहुप मंजरी मुक्तिनि माला, अँग अनुराग धरे।

रचना 'सूर' रची बृंदाबन, आनँद काज सरे॥

6. जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट।

पाँव न चालै, पंथ दुहेलो, आड़ा औघट घाट।

नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाई।

मैं भोली भोलापन कीन्हो, राख्यो ना बिलमाई।

जोगिया के जोवत बोहो दिन बीत्या, अजहूं आयो नाहीं।

विरह बुझावन अंतरि आवो, तपन लगी तन माहीं।

कै तो जोगी जग में नाहीं, कै'र बिसारी मोइ।

काईं करूं कित जाऊं री सजनी, नैण गमाया रोइ।

आरति तेरी अंतरि मेरे, आओ अपनी जांण।

मीरां व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राण॥

7. रोम-रोम रसना ह्वै लहै जो गिरा के गुन,

तऊ जान प्यारी निबरैं न मैन-आरतैं।

ऐसे दिनदीन पै दया न आई दई तोहि,

विष-भोयो विषम वियोग-सर मारतैं।

दरस-सुरस-प्यास भाँवरे भरत रहौं,

फेरियै निरास मोहिं क्यौंधो यौं'व द्वार तैं।

जीवनअधार घनआनँद उदार महा,

कैसे अनसुनी करी, चातिक पुकार तैं॥

8. अपने अँग के जानि के, जोबन नृपति प्रबीन।

स्तन मन नैन नितंब को, बड़ो इजाफो कीन॥

पिय बिछुरन को दुसह दुख, हरखि जात प्यौसार।

दुरजोधन लौं देखियत, तजत प्रान इहिं बार॥

छूटी सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबन अंग।

छीपति देहु दुहूंन मिलि, दिपति ताफता रंग॥

खण्ड–स प्रत्येक 20

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. "प्रेम निदर्शन प्रसंग में उपालंभों का जैसा आत्मीयतापूर्ण एवं प्रत्युपन्नमतित्व संपन्न प्रयोग सूर ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।" इस कथन के आलोक में भ्रमरगीत के उपालंभ वर्णन को सोदाहरण विश्लेषित कीजिए।

10. "बिहारी सतसई की लोकप्रियता का आधार बिहारी की विविध विषयक जानकारी है।" इस तथ्य की उदाहरण सहित समीक्षा करते हुए बिहारी की बहुज्ञता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

11. "मीरां के काव्य में प्रेम, विरह एवं भक्ति का चरम उत्कर्ष देखने को मिलता है।" सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

12. "शील के असामान्य उत्कर्ष को प्रेम एवं भक्ति का आलम्बन स्थिर करके तुलसी ने सदाचार एवं भक्ति को अन्योन्याश्रित करके दिखा दिया।" आचार्य शुक्ल के इस कथन को ध्यान में रखते हुए महाकवि तुलसी की भक्तिभावना का विवेचन कीजिए।